Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महात्मा गाँधी और उनका दर्शन

डॉ. श्रीमती बिन्दू परस्ते*

* सहा. प्रा. (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महा. इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – महात्मा गाँधी ना तो एक दार्शनिक थे जिन्होंने गहन अध्ययन एवं मनन के पश्चात एक सुव्यवस्थित दर्शन प्रस्तुत किया हो ना ही वे एक राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने राजनीति को राजनीति मानकर एक नेता की भूमिका निभाई हो और न ही वे एक संत थे जिन्होंने इस जगत को मिथ्या मानकर अपने को ब्रह्म में लीन कर लिया हो। किंतु अजीब बात है – वे यह सब कुछ न होते हुए भी यही सब कुछ थे। अपने जीवन दर्शन को व्यवस्थित रूप देने का अवकाश नहीं था। फिर भी दार्शनिक मुद्रा में कठोर सिद्धांतों का पालन किया। राजनीतिक राजनीतिज्ञ ना होते हुए भी उन्होंने अपने देश और विदेश की राजनीति से हर क्षण सम्बन्ध रखा। गुफावासी संसार त्यागी संत न होते हुए भी मसीहायी अन्दाज प्रखर रहा। उनका सर्व व्यापी व्यक्तित्व अक्षितिज फैला रहा तथा उनके कृतित्व में मानव जीवन के हर पहलू को सधिकार आत्मसात किया। व्यक्ति, परिवार, समाज, जाति, संस्कार, संपत्ति, भोजन, चिकित्सा, वाणिज्य, कला, विज्ञान, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मानव शास्त्र, मनोविज्ञान, प्रेम, सौन्दर्य, विवाह, ब्रह्मचर्य, पठन–पाठन, भाषण, लेखन, सम्पादन, आंदोलन, अहिंसा, सत्य, ईश्वर, धर्म, नीति, नियम, जीवन, मृत्यु, इन सभी विषयों पर उन्होंने चिंतन किया। लोगों ने उन्हें देखा, सुना, पढ़ा, सहमत असहमत हुए, उनका तीव्र समर्थन किया, उनका घोर विरोध किया किंतु प्रेम और श्रृद्धा उन्हें जितना मिला, उतना विश्व में किसी एक व्यक्ति को नहीं मिला, क्योंकि उनके विरोधी भी उन्हें एक व्यक्ति के रूप में प्रेम करते रहे ।

राजदर्शन के महारथियों का नाम यदि इस संदर्भ में लिया जाए तो प्लेटो के बजाय सुकरात का नाम निश्चय ही सार्थक होगा– मार्क्स नहीं रूसो अधिक निकट सिद्ध होंगे –रसेल नहीं तालज्ताप की भाव – भूमि गाँधी जी की अपनी भावभूमि सिद्ध होगी किन्तु इन चिन्तकों का नाम भी गाँधी जी के संदर्भ में लेना न्यायसंगत नहीं होगा क्योंकि गाँधी जी किसी भी रूप में केवल मात्र दार्शनिक नहीं थे। 'मेरा जीवन ही मेरी वाणी है'– कहने वाले गाँधी जी दार्शनिक एवं आंदोलनकर्ता दोनों थे। यदि वे केवल आंदोलन करता होते तो मैजिनी और लेनिन होते, सर्वथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले। किंतु गाँधी जी केवल बहिर्मुखी तो नहीं थे वे अंतर्मुखी भी थे और अंतर्मुखी भी इतने की भीषण आंदोलन के दौर में भी 'स्व' को नहीं भूल पाए। वे हर क्षण अपने कड़े टटोलते रहे, खोजते रहे, प्रयोग करते रहे। किंतु यह अंतर्मुखी प्रक्रिया किसी दम्भिक अहमवादी की 'स्व' को निर्मित कर उसे प्रतिष्ठित करने की प्रक्रिया नहीं थी। यह आत्मबोध की प्रक्रिया थी। इस प्रकार की एक प्रक्रिया से लगातार गुजरते रहने के कारण गाँधी जी न तो विशुद्ध बुद्धि वादी बन सके और न ही एक सन्त की तटस्थता उनमें आरोपित हो सकी। वे बच्चों की तरह खुलकर हंसते थे और संवेदना आने पर खुलकर रोने में भी नहीं हिचकिचाए। करूणा और संवेदना उनमें इतनी थी कि हर किसी का दर्द बाँटने के लिए वह लालायित रहते थे किन्तु अनुशासन में भी इतने कठोर भी थे कि किसी को दण्ड देने में वह नहीं हिचकिचाते थे। उनका व्यक्तित्व विविधता और विचित्रता के साथ एकसपना एवं अनुशासन को इस प्रकार संजोए हुए था कि उनमें व्यक्तित्व और विचारों के विरोधाभास का चमत्कारी सह –अस्तित्व सर्वथा सहज प्रतीत होता है।

महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सूक्ष्म अध्ययन का यदि प्रयास किया जाए तो उसे पर हजारों पृष्ठ लिखने पर भी संतोष नहीं होगा। श्री तन्दूलकर ने आठ भागों में उनकी जीवनी को उतारा है। किन्तु उसे भी पढ़कर लगता है कि बहुत कुछ छूट गया है। उनके जीवन का हर दिन या यह कहना अधिक उपयुक्त होगा, हर क्षण इतना महत्वपूर्ण था कि उनके व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कौनसा क्षण छोड़ दिया जाए और कौनसा क्षण ग्रहण किया जाए, एक समस्या बन जाती है। इसलिए गाँधी जी के जीवन का हर पहलू किसी न किसी रूप में किसी दूसरे महापुरूष के समकक्ष रखा जा सकता है। किन्तु अपने ही विचारों को व्यवहारिक रूप में परिवर्तित करने के लिए स्वयं आंदोलन छेड़ने और उन्हें संचालित करना गाँधी जी के व्यक्तित्व को एक अनुष्ठान प्रदान करता है। इसलिए गाँधी जी का संपूर्ण जीवन हमारे लिए हर पल एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उनका जीवन मनुष्य के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

गाँधी जी ने अपने जीवन काल में बहुत कुछ लिखा कई संदर्भों में लिखा। इस प्रकार उनका लिखा हुआ साहित्य काफी व्यापक है। किन्तु उन्होंने अपने विचारों को छोटे या बड़े निबन्धों के रूप में या प्रश्नों के उत्तारों के रूप में लिखा। पुस्तक के रूप में उन्होंने काम ही लिखा। इस दृष्टि से यदि हम गाँधी जी द्धारा किए गए साहित्य का विश्लेषण करें तो हम पाएंगे की मौलिक पुस्तक के रूप में उन्होंने जितना लिखा, उससे कई गुना अधिक उनके विचारों का संकलन प्रस्तुत हुआ। यह एक अजीब बात है कि गाँधी जी ने बहुत कुछ लिखा कई विषयों पर लिखा किंतु अपने दर्शन को क्रमबद्ध रूप में एक थीसिस के रूप में कभी नहीं लिखा। अंतिम दिनों में उनकी श्रद्धा थी कि वह अपने विचारों की थीसिस प्रस्तुत करें किन्तु कर्मयोगी होने के नाते उन्हें जीवन के संघर्षों के ने इतना बांध रखा था कि वे व्यापक व्यापक धरातल पर केवल एकान्तिक लेखन नहीं कर सके। वे अपने विविध कार्यों के बीच मे समय निकालकर निबंध लिखते रहे जो अलग–अलग संकलन के रूप में

प्रस्तुत किया है। अत: गाँधी जी द्वारा लिखे गए, साहित्य की कोस मूल रूप में गाँधी जी के बिखरे हुए विचार ही मान सकते हैं। गाँधी जी से संबंधित दूसरे प्रकार का साहित्य, विशाल है जिसमें गाँधी जी के जीवन से संबंधित है और विचारों से संबंधित है। इसके अतिरिक्त गाँधी जी साहित्य के संबंध में कई बायोग्राफी भी प्रकाशित हुई है।

स्वयं गाँधी जी ने अपने जीवन काल में बहुत अधिक नहीं पढ़ा था किंतु उन्होंने स्वयं अपने द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों को उँगलियों पर गिनाया है किंतु उनकी अपनी मौलिकता एवं सृजनशीलता इतनी प्रखर थी कि वे जो कुछ पढ़ते थे उसे आत्मसात करने की प्रक्रिया में उस पुस्तक को अपने अनुरूप ढाल लेते थे। इस संदर्भ में उनके जीवन से संबंधित एक संस्मरण प्रस्तुत है। गाँधी जी ने स्वयं अपनी जीवनी में लिखा है– एक बार दक्षिणी अफ्रीका में रेलगाड़ी में सफर करते हुए उन्होंने टस्किन की लिखी हुई पुस्तक अद्योपांत पढ़ डाली। पुस्तक पढ़ने के बाद उन्हें रात भर चैन नहीं आई और उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे अपने जीवन को उसे पुस्तक के अनुसार ढ़ालेंगे और उसी के आधार पर उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका में अपना प्रसिद्ध 'फोनेक्स आश्रम संगठित किया। इस संबंध में प्रसिद्ध इतिहासकार लुई फिशर ने लिखा है कि टस्किन की पुस्तक में इतना कोई चमत्कार नहीं था कि किसी के जीवन को रातों–रात बदल दे। यह तो गाँधी जी की विशेषता थी कि जब किसी पुस्तक को पढ़ते थे तो केवल उसमें पाठक नहीं बने रहते थे बल्कि उसमें सह लेखक की भी बन जाते थे और जो कुछ भी उसमें लिखा होता उसे अपनी कल्पना से जोड़ लेते थे। तो इस प्रकार हम देखते हैं कि पुस्तक को पढ़ने में अंतर होता है इसलिए विद्वान के लिए यह आवश्यक होता है कि वह जो कुछ पढ़े उसे पर अपनी मौलिकता की छाप भी छोड़ दें।

यूं तो थोड़ा विरोध हर विचारक में होता है विशेषताया ऐसे विचारक में जो एक लंबे समय तक विचारों की बुनियाद में चिंतन मनन होता है कभी–कभी जो विचारक पहले जो बात करता है उसे बात में बदल देता है कभी पहले जिम मान्यता को उसने प्रतिबद्धित किया है उसे मान्यता को बाद में अस्वीकार कर देता है। गाँधी जी के लेखन में यह प्रवृत्ति कुछ ज्यादा ही है इसलिए उन्हें अक्सर विरोधाभासी विचारक कहा जाता है। समय–समय पर गाँधी जी के सामने ही उन पर यह आरोप लगाया गया है कि इसके प्रतिउत्तार में गाँधी जी की स्वीकारोक्ती बड़ी यांत्रिक है। उन्होंने यही मान्यता प्रतिपादित की है कि वे एक सत्यार्थी है। इस नाते वे हमेशा, हर घड़ी सत्य का अन्वेषण कर रहे हैं सत्य के साथ प्रयोग कर रहे हैं। इस प्रक्रिया में वे सत्यों के बीच से गुजरते हैं। उनका आज का सत्य निश्चय ही कल का सत्य है। यह सत्य अनुभव जन्म सत्य है, चरम सत्य नहीं। इसलिए हो सकता है कि कल का सत्य आज के सत्य को अस्वीकार कर दे और उस समय गाँधी जी विगत सत्य के साथ जिद के कारण चिपके रहे वे सत्य के अन्वेषक हैं। सत्य का उनका अन्वेषण ही उन्हें इस बात पर अधिक अमादा करता है कि उन्हें यदि विगत कल के कथन का प्रतिवाद करना पड़े तो उन्हें हिचकिचाना नहीं चाहिए।

महात्मा गाँधी जी के जीवन के शुरुआती दौर से लेकर एक महान स्वतंत्रता सेनानी बनने तक के सफर के बारे में उनसे बेहतर आखिर कौन जान सकता है। ऐसे उनकी लिखी अमूल्य किताब सत्य के साथ मेरे प्रयोग पूरे देश, पूरे राष्ट्र, पूरे समाज का मार्गदर्शन पथ प्रदर्शन करती है। इस पुस्तक को 1920 में खत्म किया गया। इस दौरान गाँधी जी एक चर्चित व्यक्ति बन चुके थे। गाँधी जी ने इस पुस्तक का नाम सत्य के प्रयोग इसलिए रखा है कि क्योंकि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम और अभियानों में सत्य के प्रयोग यानी सत्याग्रह के जारिये सभी लड़ाईयाँ लड़ी। इस पुस्तक को गाँधी जी ने गुजराती में लिखा हिंदी में यह पुस्तक गाँधी जी की आत्मकथा सत्य के प्रयोग के नाम से जानी जाती है। हिंद स्वराज महात्मा गाँधी द्वारा लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक मानी जाती है। इस किताब को भी गाँधी जी गुजराती भाषा में लिखा है। इसलिए गाँधी जी ने विदेशी सभ्यता संस्कृति की आलोचना की है। साथ ही मौजूदा समय में मानवता की समस्याओं के बारे में भी बताया है। इस किताब की प्रमुख विशेषताएं यह है कि यह प्रश्न उत्तार के प्रारूप में लिखी गई है। इसमें कानूनी पेसे से संबंधित वकीलों, डॉक्टरों तथा रेलवे से जुड़े लोगों और उनके विचारों के बारे में लिखा गया है।

महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह का जो मार्ग अपनाया वह केवल राजनीति में ही नहीं मनुष्य के सारे कार्यकलापों के साथ बंधा हुआ है। मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में, पारिवारिक जीवन में, सामूहिक जीवन में, प्रादेशिक राष्ट्रीय जीवन में, सत्याग्रह का प्रयोग किया जा सकता है। गाँधी जी के जीवन में ऐसे बहुत से उदाहरण भरे पड़े हैं, जब उन्होंने जीवन के कई क्षेत्रों में सत्याग्रह का प्रयोग किया है, और सफल भी रहे हैं। इतिहास में हमें कितने ही उदाहरण मिलते हैं जिसमें मनुष्य के जीवन में सत्याग्रह का सफल प्रयोग हुआ है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. महात्मा गाँधी सत्य के साथ मेरे प्रयोग
2. डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य – गाँधी दर्शन
3. गाँधी, हिज लाइफ एंड मैसेज फॉर दी वर्ल्ड – लुई फिशर
4. माय फाउंड नो पीस – वेब मिलर

****